“उस दिन से आज तक रुकी नहीं हूँ”

शिक्षिका रीता मंडल से पुरुषोत्तम ठाकुर की बातचीत

कोरोना काल के संकट के समय कई ज़िम्मेदार लोग सिर्फ़ अपने और परिवार के बारे में सोचकर घर के अन्दर दुबके हुए थे। दूसरी ओर कई लोग अपनी परवाह किए बिना समाज की ज़रूरत को महसूस कर सामने आए, सहायता का हाथ बढ़ाया और अपनी ज़िम्मेदारी निभाई, इनमें हमारे शासकीय स्कूलों के शिक्षक प्रमुख हैं। ऐसी ही एक शिक्षिका हैं, श्रीमती रीता मंडल।

रीता मंडल ने बच्चों के प्रति ज़िम्मेदारी निभाते हुए कोरोना काल में भी अपना काम निरन्तर जारी रखा हुआ है। हमने उनसे उनकी जीवन यात्रा, शिक्षा और शिक्षक बनने के सफ़र से लेकर उनके द्वारा किए जा रहे नवाचार और कोरोना काल में एक शिक्षक के अनुभव, ऑनलाइन कक्षा से लेकर मोहल्ला कक्षा के अनुभव के बारे में लम्बी बातचीत की है।

पुरुषोत्तम : नमस्कार, अपने बारे में बताएँ।

रीता : नमस्कार, वर्तमान में, मैं पीजी उमाठे पूर्व माध्यमिक कन्या शाला, शांति नगर, विकासखण्ड धरसीवां, रायपुर में शिक्षिका हूँ। मेरा जन्म स्थान बालको है, जो कोरबा ज़िले में आता है। छत्तीसगढ़ का यह ज़िला विद्युत कम्पनी, बालको संयंत्र और नेशनल थर्मल पावर कॉरपोरेशन (एनटीपीसी) के लिए भी जाना जाता है।

मेरे पापा बालको एल्युमीनियम कम्पनी में नौकरी करते थे। हम तीन भाई-बहिन हैं और हमने एमजीएम स्कूल बालको से पढ़ाई

की है। पढ़ाई के दौरान मैंने कोई ट्यूशन या कोचिंग क्लासेस नहीं लीं, सब स्वयं ही किया। और मेरा मानना है कि जब बच्चे ख़ुद पढ़ते हैं तो अवधारणाएँ ज़्यादा स्पष्ट होती हैं। बारहवीं के बाद मैंने कोरबा महाविद्यालय से गणित में स्नातक एवं स्नातकोत्तर किया और फिर बिलासपुर से बीएड। संगीत और नृत्य में भी मेरी रुचि है। मैं बंगाली परिवार से हूँ। घर में बंगाली और हिन्दी का ही ज़्यादा उपयोग होता था। अँग्रेज़ी माध्यम के स्कूल में पढ़ने से अँग्रेज़ी भाषा सीखी।

पुरुषोत्तम : बालको में जहाँ आपका बचपन गुज़रा वहाँ का परिवेश कैसा था?

रीता : बालको का माहौल बहुत अच्छा था पर प्रतियोगिता की भावना वहाँ काफ़ी थी। जैसे, पापा के दोस्त के बच्चे और हम एक ही कक्षा में हैं और उनका बेटा अच्छे नम्बर लाया है, तो पापा हमको उसका उदाहरण देते थे।

इससे मैं दबाव महसूस करती थी। मुझे इस बात के लिए टेंशन नहीं होता था कि मैं कितने नम्बर लाई, बल्कि यह टेंशन रहता कि पापा के दोस्त के बच्चे कितने नम्बर लाए। मैं अब अपने स्कूल के बच्चों के अंकों की तुलना नहीं करती, क्योंकि हर बच्चे का पढ़ने का अपना एक तरीक़ा होता है, उसकी समझ व रुचि भी अलग होती है। मैंने अपने बचपन में यह सीख ली है। उस समय तो नहीं कह पाई कि पापा आप ग़लत सोचते हैं, अब मैं अपने बच्चों के बीच ये चीज़ नहीं लाती।

पुरुषोत्तम : आपने शिक्षिका बनना क्यों चुना?

रीता : मैंने घर में मदद देने के लिए छोटी कक्षाओं के बच्चों को पढ़ाना काफ़ी पहले शुरू कर दिया था। बच्चे हमेशा बोलते थे कि मेम, आपके समझाने का तरीक़ा बहुत अच्छा है। मेरे समझाने का तरीक़ा अच्छा है और बच्चे इसे समझ पाते हैं तो मुझे शिक्षक ही बनना चाहिए, यह मैंने ठान लिया। फिर मेरे सभी शिक्षक भी मुझे प्रोत्साहित करते थे, कि आपके अन्दर शिक्षक के सारे गुण हैं, यदि आप शिक्षक बनती हैं तो स्कूल के बच्चे इसका लाभ ज़रूर उठा सकेंगे।

मैं पहली बार बीएड के लिए बालको से बाहर निकली। इतने साल हम माता-पिता के साथ ही थे और अब बिलासपुर में एक हॉस्टल की लाइफ़ गुज़ारनी थी।

पुरुषोत्तम : अपने बीएड के अनुभव के बारे में बताएँ।

रीता : बिलासपुर से बीएड की पढ़ाई करना मेरे जीवन का एक अलग ही पड़ाव था। सुबह 5 बजे कॉलेज के मैदान में पहुँच जाना होता था। 10 मिनट लेट होने पर पूरे मैदान के 10 चक्कर लगाने होते थे। पर मैंने बीएड के उस एक साल में बहुत कुछ सीखा– बच्चों को, उनके मनोविज्ञान को जानना, आदि। इंटर्नशिप के दौरान पहली बार सरकारी स्कूलों में गई, यह बहुत ही अलग अनुभव था। मैं एक प्राइवेट स्कूल से पढ़ी हूँ, वहाँ का परिवेश, चारदीवारी, भवन, पानी की व्यवस्था सबकुछ बहुत अलग था। जब सरकारी स्कूल में पढ़ाने के लिए गई तो स्कूलों की बहुत ही विपरीत छवि देखी। पर चूँकि मुझे पता था कि यहाँ मुझे दो-तीन महीने के लिए ही आना है, अतः मैंने ज़्यादा नहीं सोचा।

बीएड के बाद कोरबा की पूर्व माध्यमिक शाला, लालघाट में मेरी पोस्टिंग हुई। वह उन्नत शाला थी, कक्षा छठवीं अभी खुली ही थी और इसमें कुल 35 बच्चे थे। मेरा नज़रिया और अनुभव अँग्रेज़ी स्कूल का था, जबकि यहाँ हिन्दी माध्यम के शासकीय स्कूल थे। यहाँ मध्याह्न भोजन पकता है, बच्चे अपनी-अपनी थाली लाते हैं, और खाते हैं। मैंने देखा कि वे दिनभर एक ही ड्रेस पहने रहते हैं। बच्चे जिस तरीक़े से स्कूल आते, उसे देखकर मैं बहुत ही परेशान थी कि मैं कैसे कर पाऊँगी, क्योंकि बच्चों को पढ़ाना है तो उनके साथ घुलना-मिलना भी पड़ेगा और ये मैं कैसे करूँगी? धीरे-धीरे मैंने उनका परिवेश जाना, उनके माता-पिता की समस्याएँ जानीं, उनका पूरा जीवन देखा, और कई बार उनकी बस्तियों में गई। मैंने देखा कि ये कैसे घरों में रहते हैं, कैसे गुज़र-बसर करते हैं, क्यों ऐसे हैं, नहाते क्यों नहीं, रोज़ कपड़े क्यों नहीं बदलते? मैंने पाया कि उनकी आर्थिक स्थिति बहुत ही ख़राब थी। उस दिन मैंने ठाना कि मुझे इन बच्चों के साथ काम करना है।

पुरुषोत्तम : आपने स्कूल को कैसे समझा? इन बच्चों के साथ, उनके माता-पिता के साथ और स्कूल में अपने सहयोगियों के साथ काम को आगे कैसे ले गईं?

रीता : इस शाला में हम तीन शिक्षकों की नियुक्ति हुई थी। तीनों शिक्षक ग़ैर-सरकारी स्कूलों से पढ़कर आए थे। यह स्कूल और इसका परिवेश बहुत अलग था। पर हम तीनों ही युवा थे। हमारे अन्दर एक ज़ज़्बा था कि कुछ बेहतर करेंगे। जैसा कि मैंने कहा, माध्यमिक स्तर पर कक्षा छठवीं ही थी और हम तीन थे। तय किया कि एक शिक्षक छठवीं कक्षा में जाएगा बाक़ी दो शिक्षक प्राथमिक कक्षाओं के शिक्षकों के साथ मिलकर काम करेंगे। मैंने गणित और अँग्रेज़ी का ज़िम्मा लिया, दूसरी शिक्षिका ने हिन्दी का और एक अन्य शिक्षिका ने पर्यावरण पर काम किया।

पुरुषोत्तम : आपने कैसे पढ़ाया?

रीता : मैं सभी अल्फ़ाबेट (वर्णमाला) एक ही दिन में पढ़ाने का नहीं सोचती थी। एक-एक अल्फ़ाबेट पर हम हफ़्तेभर काम करते ताकि उस अल्फ़ाबेट से सम्बन्धित जो भी समझ है वो बच्चों में बने। ऐसा नहीं कि वो सिर्फ़ 'ए फॉर एप्पल' पर ही रुक जाएँ, बल्कि 'ए फॉर एरोप्लेन' भी होता है, यह भी जानें। इसके लिए मैं बहुत-से चित्र भी उनके साथ साझा करती, उनपर बात करती। मैंने पास के आँगनवाड़ी केन्द्र की दीदी से बात कर वहाँ भी काम किया। तीन साल तक कोरबा में काम करने के बाद मेरी पोस्टिंग पीजी उमाठे गर्ल्स स्कूल, रायपुर में हो गई। यहाँ आकर मुझे ऐसा लगा कि जैसा मैं चाहती थी वैसा कुछ मैं कर पाई। मैं चाहती थी कि लड़कियाँ कराटे सीखें, पॉक्सो बॉक्स हमारे स्कूल में लगाया। बच्चियों को गुड टच और बेड टच से सम्बन्धित कई सारी चीज़ें बताईं। 2010 में बच्चों के लिए एक्स्ट्रा एक्टिविटी, टीएलएम और अन्य प्रोजेक्टों पर काम करना शुरू किया। दूसरे संकुल के स्कूलों में भी अपना टीएलएम लेकर जाती थी। वहाँ बच्चों के साथ-साथ कुछ शिक्षकों ने भी टीएलएम बनाना शुरू कर दिया, तो इस प्रकार से सीखने-सिखाने का सिलसिला जो 2010 से शुरू हुआ वो आगे बढ़ता गया है। रात में दो बजे तक अपने टीएलएम बनाती रहती हूँ तो घर में कई बार हमारी लड़ाई भी होती है।

पुरुषोत्तम : अभी कोरोना काल में आपका अनुभव कैसा रहा?

रीता : मार्च 23, 2020 से ये कोविड का दौर शुरू हुआ। स्कूल भी अचानक बन्द हो गए, उस समय कुछ समझ नहीं आ रहा था कि क्या करें? कुछ दिन तो हम ख़ुद भी घर में ही थे। एक डर था मन में, और पढ़ाई के बारे में कोई सोच भी नहीं रहा था। उस समय ऐसा था कि कोरोना से बचो और अपनी जान बचाओ। अप्रैल-मई-जून, ये तीन महीने गर्मी की छुट्टियों जैसे थे। सब घर में थे और बच्चों को भी जनरल प्रमोशन दे दिए गए। सोचा था जुलाई में स्कूल खुल जाएँगे, पर ऐसा नहीं हुआ। हमारे बच्चों का वॉट्सएप

ग्रुप बना ही हुआ था और बच्चे जनरल प्रमोशन पा चुके थे। मैं नए कोर्स से सम्बन्धित यानी नई कक्षा से सम्बन्धित कुछ-कुछ वीडियो ग्रुप में डाल देती थी। वॉट्सएप ग्रुप बनाने की योजना तो बाद में आई, हमने पहले से ही ग्रुप बनाए हुए थे। इनमें हम अपनी अध्ययन सामग्री के वीडियो, एवं ख़ुद के बनाए वीडियो डाल देते थे और फिर एक हफ़्ता उसपर ही चर्चा चलती थी। बच्चे उसपर होमवर्क करके भेज देते थे।

पुरुषोत्तम : मतलब ऑनलाइन कक्षाएँ शुरू होने से पहले ही आपने पहल कर दी थी?

रीता : हाँ, हम उससे पहले से ही वॉट्सएप पर सामग्री डाल रहे हैं। कुछ बच्चों के यहाँ एंड्राइड फ़ोन था तो हमने उपयोग करना शुरू कर दिया था। कुछ अन्य शिक्षक भी अपने सामग्री डालने लगे थे और साथ ही यू-ट्यूब का लिंक भी डाल देते थे। उसके बाद 'पढ़ई तुंहर द्वार' योजना आई, www.cgschool.in वाला पोर्टल है, और उस समय भी हर शिक्षक वेबेक्स से कक्षाएँ लेते थे। एससीईआरटी से जो कक्षाएँ संचालित होती थीं वो कम ही थीं। उसके बाद एससीईआरटी से सूचना आई कि यदि किसी को गणित या कोई और ऑनलाइन कक्षा लेनी है तो उसकी मदद की जाएगी। मैंने लगन से सीखा। उस समय कोई बाध्यता नहीं थी कि आपको ऑनलाइन कक्षाएँ लेनी ही हैं, जो लेना चाहे वो ले सकता है। पर मैंने सोचा कि अगर ऐसा कोई माध्यम है, जिससे हम बच्चों को ऑनलाइन पढ़ा सकते हैं, तो मैं ज़रूर उसको सीखूँगी। हमारे ज़िले में तब ऑनलाइन कक्षाएँ शुरू नहीं हुई थीं, पर मैंने अपनी कक्षाएँ लेना शुरू कर दिया। हम वॉट्सएप पर बच्चों को कुछ चीज़ें तो भेज पाते थे पर लाइव वीडियो नहीं हो पाता था, और वेबेक्स के माध्यम से ये सम्भव था, बच्चे दिलचस्पी लेने लगे। मैंने बहुत सारे समूहों में अपने लिंक डालने शुरू किए और लगभग 110-120 बच्चे मेरी कक्षाओं में जुड़ते थे। चिन्ता यह थी कि मेरे स्कूल के बच्चे ज़्यादा नहीं जुड़ पा रहे थे। वेबेक्स क्या है, उनको समझ नहीं आ रहा था और उस समय हम बच्चों के सीधे सम्पर्क में नहीं थे। मैं अपने फ़ोन में गणित करती थी उनसे कहती कि आप अपने प्ले स्टोर से वेबेक्स को डाउनलोड करिए और अपना ईमेल आदि डालिए, पर बहुत-से बच्चे नहीं कर पा रहे थे। फिर मैंने सोचा कि जो बच्चियाँ कर लेती हैं, उनकी मदद ली जाए। मैंने उन बच्चियों को वार्ड लीडर बनाया। लीडर को बोला कि वो बच्चों से सम्पर्क करे और उनके फ़ोन में ख़ुद वेबेक्स डाउनलोड करे। वार्ड लीडर वाली प्रक्रिया का बहुत अच्छा रिजल्ट मिला और मेरे यहाँ के 60-65 प्रतिशत बच्चे जुड़ने लगे। ऑनलाइन कक्षा अच्छी चलने लगी। फिर मैंने पीपीटी बनाना भी सीखा। एक और मुख्य दिक़्क़त यह थी कि कई बच्चों के पास स्मार्टफ़ोन नहीं थे। अगर थे भी तो तीन-चार भाई-बहिन होने से उन्हें नहीं मिलता, फिर कई बच्चों के पास स्मार्टफ़ोन है, इंटरनेट है, पर रिचार्ज नहीं करा पाते। कई के फ़ोन माता-पिता साथ ले जाते हैं, और इन वजहों से बच्चे कक्षा में जुड़ना चाहते हुए भी जुड़ नहीं पाते। तब मैंने मोहल्ला कक्षा के बारे में सोचा। मेरा अपना स्कूल शांति नगर से बहुत दूर था तो मैंने

अपने घर के पास कबीर नगर बस्ती में अटल आवास, और वाल्मीकि नगर में मोहल्ला कक्षा का काम शुरू किया।

पुरुषोत्तम : ये मोहल्ला कक्षा शुरू हो गई थी जब सरकार ने इसे शुरू किया था?

रीता : जी। लाउडस्पीकर कक्षाएँ अधिकतर गाँवों में ही संचालित थीं, क्योंकि शहर में बिना अनुमति के नहीं बजा सकते थे। अतः सोचा कि मैं ख़ुद बच्चों को इकट्ठा कर उस मोहल्ले में जाकर पढ़ा सकूँ। कबीर मोहल्ले में, वाल्मीकि नगर और अटल आवास दो जगह मुझे ऐसी लगीं और मैंने सोचा उनके साथ काम करूँ। वहाँ एक मितानिन दीदी, आँगनवाड़ी सहायिका से मेरा परिचय था, उन्होंने मेरी मदद की। बच्चों को लाना शुरू किया और वहीं पर हमने दरी बिछाकर बच्चों के साथ काम करना शुरू किया। मैं कविता एक्शन करके पढ़ाती तो बच्चों को ख़ूब मज़ा आने लगा और काफ़ी छोटे बच्चे जिन्होंने अभी स्कूल जाना भी शुरू नहीं किया था, वो भी आने लगे। प्राइवेट स्कूलों के बच्चे भी आने लगे। ऐसे में कुछ परेशानी भी हुई क्योंकि अलग-अलग स्कूल और कक्षाओं के बच्चे एक साथ आने लगे थे।

मैंने सोचा ऐसी कुछ चीज़ें की जाएँ जो हर कक्षा के लिए लाभदायक हों और किसी-न-किसी अवधारणा से जाकर जुड़ जाती हों। मैंने आकार, सन्धि, उपसर्ग, प्रत्यय आदि से सम्बन्धित कुछ गतिविधियाँ सोचीं। जब बच्चे बढ़ गए और उनके अभिभावक भी आने लगे तो जगह कम पड़ने लगी। वहाँ के पार्षद से बात की और उन्होंने कबीर नगर का सामुदायिक भवन मुझे दिलाया। तब अटल आवास के साथ-साथ मैंने वाल्मीकि नगर के कबीर नगर स्कूल के प्रधान पाठक अजय शर्मा को फ़ोन किया कि यहाँ अब मेरे पास पर्याप्त जगह है और आप अपने स्कूल के बच्चों को यहाँ भेज सकते हैं। उन्होंने सब बच्चों के समूह में मोहल्ला कक्षा के बारे में मैसेज डाला और फिर वो बच्चे भी मेरे पास आने लगे। इस प्रकार मोहल्ला कक्षा संचालित हुई, और सामग्री देने का जो सिलसिला शुरू हुआ उससे

मुझे एक बहुत अच्छा नाम भी मिला– 'पेटी वाली दीदी'। बच्चे और उनके अभिभावक मुझे प्यार से उस नाम से बुलाने लगे।

मैंने ख़ुद भी सीखा और बच्चों के साथ जुड़ाव इतने वर्षों में पहले कभी नहीं हुआ क्योंकि मैंने इस बार अलग-अलग स्कूलों और विभिन्न परिवेश से आने वाले बच्चों के साथ काम किया।

पुरुषोत्तम : जिन स्कूलों के बच्चे आ रहे थे उनके और आपके सहयोगी शिक्षक भी आपके साथ जुड़े या नहीं?

रीता : मैंने किसी को फ़ोर्स नहीं किया। मैंने कबीर नगर के स्कूल में ज़रूर कहा था कि आप भी आइए और मेरी मदद करिए, क्योंकि बच्चे बढ़ते जा रहे थे और 60-70 बच्चों को अकेले सँभालना मुश्किल था पर कोविड के चलते कोई तैयार नहीं हुआ। कई शिक्षकों की ड्यूटी भी कोविड में लगी हुई थी, आँगनवाड़ी की सहायिका मितानिन दीदी ने मेरा सपोर्ट किया। उनको भी काम पर जाना पड़ता था, तो उनकी बेटी ने मेरा सहयोग किया। शिक्षा मित्र ने भी मुझे सहयोग किया। मैं 1000 रुपए मासिक उनके खाते में डालती थी और वो मुझे दो-ढाई घण्टे का समय देते थे।

मेरी कक्षा पहले कबीर नगर में ही शुरू हुई थी। मुझे ख़राब लगता था कि मैं जिस स्कूल में हूँ वहाँ के बच्चे मोहल्ला कक्षा से लाभान्वित नहीं हो रहे हैं। मैंने बीएड करने वाली कुछ बच्चियों, जो शांति नगर के आसपास रहती थीं, से बात की। इस तरह कुल चार शिक्षा मित्र मेरे साथ थे जो कक्षाएँ चला रहे थे।

पुरुषोत्तम : आपको या आपके परिवार को डर नहीं लगता था?

रीता : मुझे नहीं लगता था, मैं पूरी एहतियात रखती थी। वापस आकर नहाना, कपड़े धोना, चार महीने तक बहुत किया। उसके बाद यह कुछ कम हुआ, क्योंकि कई बार जब बच्चे आना बन्द कर देते थे तो मुझे मोहल्ले में जाना पड़ता था। वहाँ औरतें बाहर बैठी रहती थीं, मैं उनसे पूछती कि यहाँ कोई केस तो नहीं है! वो बोलतीं, "एती कोरोना नइं आए, कोरोना आएबर डरथे, हम ठंडा फ्रिज के खाना नइं खाथोन, हम तो ताजा हवा, ताजा खाना खाथोंन।" उनकी बात सुनकर मुझे ख़ुद लगता था कि इनका आत्मविश्वास इतना मज़बूत है! अच्छा भी लगता था कि वो लोग डरते नहीं हैं। वो अपने बच्चों को भेजने में ज़रा भी नहीं हिचकिचाए, बस ये ही कि वो केयरलेस रहते थे। शुरू-शुरू में मास्क नहीं लगाते थे, मैंने उनको मास्क वितरित किए। मोहल्ला कक्षा का सफ़र शुरू किया था कबीर नगर से, विगत पाँच महीनों से चला रही थी, अब ये बताते हुए ख़ुशी हो रही है कि उन पूरी कक्षाओं को वहाँ के शिक्षकों ने शाला के प्रांगण में ही चलाना शुरू कर दिया है। सुबह 8-9 प्राइमरी और 9-10 मिडिल के, कुल 130 बच्चे वहाँ आने लगे हैं। मुझे बहुत ही ख़ुशी है कि जिस सफ़र को शुरू किया, वहाँ के शिक्षक भी अब उसे मान्यता दे रहे हैं। ये बच्चे पढ़ाई से जुड़े हुए थे और अब इनको निरन्तर जोड़कर रखना है। मेरा आगे भी यही सपना है कि शांति नगर के आसपास मैं इस तर्ज पर इतनी ही अच्छी एक मोहल्ला कक्षा चला सकूँ। अभी भी नूरानी चौक और तेलीबाँधा में कक्षाएँ चल रही हैं पर उसमें बच्चे कम हैं। मैं चाहती हूँ कि जिस तरह कबीर नगर के सामुदायिक भवन में 70-80 बच्चे पढ़ते थे, वैसे ही यहाँ भी ज़्यादा बच्चे आएँ और इन प्रयासों का लाभ उठाएँ। कोशिशें जारी हैं।

शंकर नगर में सेक्टर 2 में दुर्गा मैदान है, वहाँ भी जगह देखकर आई हूँ। अभी उसकी साफ़-सफ़ाई हो रही है और सबका साथ रहा तो वहाँ भी मोहल्ला कक्षाएँ जल्दी शुरू हो जाएँगी।

मेरा सपना है कि अपनी शाला में एक गणित लैब बना सकूँ। अभी लॉकडाउन में मैंने बच्चों के लिए टीएलएम बनाए हैं। मुझे अपनी शाला में गणित प्रयोगशाला के लिए कमरा मिले इसके लिए मैंने प्राचार्य महोदया से बात भी की है। स्कूल में एक ऐसी गणित लैब बने जिसमें हर अवधारणा से सम्बन्धित टीएलएम, एक्टिविटी, खेल हो और उस लैब में दूसरे स्कूलों के शिक्षक भी आएँ, देखें, और उसे बनाने के लिए प्रेरित हों। यदि कोई शिक्षक यहाँ से टीएलएम ले जाना चाहे तो लाइब्रेरी की किताबों की तरह ही हमें उसे देने में भी ख़ुशी होगी।

पुरुषोत्तम : आपके कक्षा-कक्ष कैसे हैं?

रीता : कक्षा में बच्चों को गणित थोड़ा कठिन लगता है, क्योंकि जो बच्चे मुझे कक्षा 6 में मिलते हैं, कई बार उनकी प्राथमिक कक्षा की अवधारणा भी स्पष्ट नहीं होती है। मेरी कोशिश रहती है कि हमेशा इस वर्ष के ज्ञान को पूर्व वर्ष के ज्ञान से जोड़ते हुए पढ़ाऊँ।

यदि मुझे बच्चे को लघुत्तम समापवर्त्य पढ़ाना है तो मैं बच्चों को भाग करना और पहाड़े सिखा पाऊँ। मेरी कोशिश रहती है कि हर पाठ को सभी बच्चे अच्छे-से समझें क्योंकि कोर्स को जल्दी से आगे बढ़ाने के लिए पढ़ाने पर बच्चे की अवधारणा की समझ कहीं-न-कहीं छूटी रह जाती है और हमें आगे की बातों को पढ़ाने में तकलीफ़ होती है। कई बार अन्तिम समय में अतिरिक्त कक्षाएँ लेनी पड़ती हैं। कई विषयों का कोर्स जल्दी ख़त्म हो जाता है तो उन विषयों के शिक्षक गणित के लिए अपनी कक्षा दे देते हैं।

मेरा मानना है कि जब ये बच्चे कक्षा 9 में जाएँ तो वहाँ के शिक्षक बोलें कि हाँ, ये बच्चे सीखकर आए हैं।

एक बार मेरे स्कूल में रोटरी क्लब के कुछ लोग आए थे, उन्होंने कक्षा 6, 7 और 8 के बच्चों के साथ सर्वे किया कि आपका सबसे प्रिय विषय कौन-सा है? सबसे ज़्यादा बच्चों ने कहा, हमें गणित पसन्द है! मेरे लिए सबसे ख़ुशी की बात है कि गणित जैसे विषय को बच्चे अपना सबसे पसन्दीदा विषय बता रहे हैं, यानी उन्हें कहीं-न-कहीं रोचकता महसूस हुई होगी! मैं अपनी कक्षा का वातावरण हल्का और ख़ुशनुमा रखती हूँ ताकि बच्चे मेरे साथ हमेशा सहजता से रहें।

पुरुषोत्तम : और अँग्रेज़ी के बारे में?

रीता : अँग्रेज़ी में भी नवाचार की कई कोशिशें की हैं। सबसे ज़्यादा दिक़्क़त आती है बच्चे के घर के माहौल में अँग्रेज़ी नहीं होने की। उनके लिए कक्षा 6, 7 और 8 की अँग्रेज़ी पाठ्यपुस्तकें ही अँग्रेज़ी का पूरा संसार हैं। और उन्हें उस संसार से परिचित कराना बहुत ही चैलेंजिंग है। मैंने मेरी कक्षा में जितनी भी चीज़ें, जैसे– टेबल, कुर्सी, डस्टर, चाक, बोर्ड, डेस्क, पेन, पेंसिल और क्लास के बाहर पेड़, स्टेज आदि, दिखती हैं, सब पर नाम लिख दिए ताकि, जब कोई कुछ पूछे तो बच्चे रिएक्ट तो करें। मेरा पहला उद्देश्य था कि बच्चे अँग्रेज़ी के प्रति कम्फर्टेबल हों। जैसे, पेड़ पर 'Tree' लिखा तो बच्चे जब खेलते, घूमते हुए इन चीज़ों को देखते तो अपने दोस्तों, सहेलियों से चर्चा करते कि ये क्या लिखा है? स्पैलिंग के बारे में बात करते, इसके अर्थ पूछते। धीरे-धीरे जब बच्चों ने क्लास में एक-एक पैराग्राफ़ पढ़ना शुरू किया, उनके अन्दर कॉन्फिडेंस आया कि वे भी अँग्रेज़ी पढ़ सकते हैं। यह विषय भी हमारे दैनिक जीवन से जुड़ा हुआ है और कहीं-न-कहीं उपयोग करना है। बच्चों को कम्प्यूटर सिखाते वक़्त भी बताती हूँ कि कम्प्यूटर में अँग्रेज़ी का महत्त्व है, कम्प्यूटर में यदि उन्हें आगे कुछ करना होगा तो अँग्रेज़ी से मदद मिलेगी। जब कहीं जॉब के लिए जाना है तो भी साक्षात्कार में अँग्रेज़ी में ही सवाल पूछे जाते हैं और प्रतियोगी परीक्षा में भी कुछ प्रश्न अँग्रेज़ी के होते ही हैं, ये सब मैंने उनको बताया तो कुछ बच्चों को लगा कि हाँ, हमें अँग्रेज़ी सीखनी चाहिए।

पुरुषोत्तम : यह जो समय है, ये बच्चों और आपके लिए कितना चुनौतीपूर्ण है?

रीता : काफ़ी चुनौतीपूर्ण है। जितनी भी चीज़ें कर रहे हैं वो सब स्वेच्छा से कर रहे हैं, चाहे मोहल्ला कक्षा हो या कुछ और। टेक्निकली भी जो हम सीख रहे हैं, वह भी ख़ुद की प्रेरणा या ज़रूरत से कर रहे हैं। हमें इसमें बहुत ज़्यादा समय देना पड़ रहा है। जब सामान्य तौर पर स्कूल चलते हैं तब भी इतना समय पढ़ाई के लिए नहीं देते थे जितना आज दे रहे हैं। घर को मैनेज करना, मोहल्ला कक्षा, ऑनलाइन कक्षा और साथ में ख़ुद भी सीखना मेरे लिए तो बहुत ही चैलेंजिंग व लाभप्रद रहा, मैंने बहुत सीखा। साथ ही जो बच्चे पढ़ाई कर रहे हैं, उनकी भी कुछ वाज़िब समस्याएँ हैं, जिनको हम नज़रन्दाज़ नहीं कर सकते। बच्चे भी इनको फेस कर रहे हैं, उनके लिए भी ये समय चैलेंजिंग रहा है।

पुरुषोत्तम : हम लोग किसी-न-किसी से प्रेरित होते हैं तो आपको बचपन से लेकर आज तक किन लोगों से प्रेरणा मिली और आपके

कामों में वो किस तरह रिफ्लेक्ट कर रहा है?

रीता : जी, बिलकुल! मैंने अपने शिक्षकों से भी बहुत कुछ सीखा, ख़ासकर जैसा मैंने बताया कि जब मैं बीएड कर रही थी मैंने सीखा कि एक शिक्षक की क्या भूमिका होती है, उसका क्या महत्त्व है। पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम के लिए मेरे मन में बहुत सम्मान है, उनसे बहुत प्रभावित हूँ। मुझे पढ़ना बहुत पसन्द है। अभी ज़रूर किताबों से थोड़ी दूर हो गई हूँ पर आजकल मोबाइल में ही बहुत कुछ है, उसी से पढ़ती हूँ। यू-ट्यूब से मुझे नई चीज़ें सीखना और करना बहुत अच्छा लगता है।

पुरुषोत्तम : बच्चों के साथ इस तरह काम करना है, इस विचार को पुख़्ता करने में आपको किस-किस ने मदद की?

रीता : टेक्नोलॉजी का उपयोग करते हुए बच्चों के साथ कैसे काम करना है, इस सन्दर्भ में मेरे बिलासपुर के एक साथी शिक्षक ने बहुत सहयोग किया। लेकिन जैसा कि मैंने बताया फ़ोन के द्वारा बहुत बच्चे जुड़ नहीं पा रहे थे। तब मैंने इन बच्चों और इनके अभिभावकों से मिलना तय किया। मैंने पाया कि बच्चे और अभिभावक भी चाहते थे कि सीखने-सिखाने का कुछ काम शुरू हो और तब मैंने मोहल्ले में ही छोटे-छोटे समूह में बच्चों को बुलाकर काम करने का निश्चय किया। कोविड के दौरान शिक्षा के काम को जारी कैसे रखना है इसकी गाइडलाइन भी आ चुकी थी, थोड़ी मदद उससे भी मिली।

पुरुषोत्तम : स्कूल खुलने के बाद क्या करना होगा? आगे की क्या योजना है?

रीता : हमें स्कूल खुलने का इन्तज़ार है। मोहल्ला कक्षा, ऑनलाइन कक्षा, सबकुछ हो रहा है पर फिर भी हमें लग रहा है कि कुछ पीछे छूटा हुआ है। कक्षा-कक्ष गतिविधियाँ, अन्त:क्रिया, अन्तर्सम्बन्ध नहीं हैं, और इन माध्यमों से हो भी नहीं सकते। हम इतनी मेहनत कर रहे हैं तब भी लगता है जल्दी स्कूल खुलें और हम बच्चों को फिर से उस परिवेश में ले आएँ। टेक्नोलॉजी के माध्यम से लगभग 30% बच्चे ही हमसे जुड़ पाए हैं। कुछ बच्चे मोहल्ला कक्षाओं में आते थे लेकिन वहाँ कक्षानुसार काम नहीं हो पाता था। तो ऐसे बहुत-से बच्चे हैं जो जुड़ ही नहीं पाए। स्कूल खुलने के बाद सभी बच्चों के लिए एक ऐसा संक्षिप्त पाठ्यक्रम बनाना होगा, जिससे उनको गणित की अपनी अवधारणाओं को दोहराने में मदद मिले। चूँकि मैं गणित पढ़ाती हूँ तो मैंने गणित के बारे में ही सोचा है।

पुरुषोत्तम : धन्यवाद।

श्रीमती रीता मंडल, पीजी उमाठे पूर्व माध्यमिक कन्या शाला शांति नगर, रायपुर, छत्तीसगढ़ में शिक्षिका हैं। उन्हें किताबें पढ़ने के साथ-साथ गायन, नृत्य, साहित्य और क्रिएटिव कार्यों में रुचि है। गणित जैसे विषय को बच्चों के लिए रुचिकर बनाने के लिए पढ़ाई के तरीक़ों में अनेक बदलाव किए। 2020 में इन्हें शून्य निवेश नवाचार के लिए दिल्ली में मानव संसाधन विकास मंत्रालय से सम्मान, 2018 में रायपुर ज़िला मोस्ट पॉपुलर टीचर का अवॉर्ड तथा 2019 में मुख्यमंत्री गौरव अलंकरण के अन्तर्गत ज्ञानदीप पुरस्कार प्राप्त हुआ।

सम्पर्क : reetamondal182@gmail.com

पुरुषोत्तम सिंह ठाकुर, 2012 से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के साथ जुड़े हैं। वह रिसोर्स पर्सन, कम्युनिकेशन एंड एनगेजमेंट के बतौर धमतरी स्थित ज़िला संस्थान में कार्यरत हैं। फ़ाउण्डेशन से जुड़ने से पहले पुरुषोत्तम का 20 साल का पत्रकारिता का अनुभव है जिसमें 7 साल एनडीटीवी इंडिया के राज्य प्रतिनिधि के बतौर भुवनेश्वर से रिपोर्टिंग की है। अभी भी वह *PARI* और *डाउन टू अर्थ* जैसी पत्रिकाओं में शिक्षा और ग्रामीण भारत की कहानियाँ लिखते हैं।

सम्पर्क : purusottam.thakur@azimpremjifoundation.org